पश्चाताप

कहानी

माणक तुलसीराम गौड़

नम्बर– 247, दूसरी मंजिल, नौवीं मैन, शान्तिनिकेतन
लेआउट, अरेकेरे, बैंगलोर – 560076

देश के पश्चिमी प्रान्त राजस्थान के पश्चिमी भू-भाग यानी मरुप्रदेश का एक गाँव। आबादी ठीक-ठीक। लोगों की आजीविका के साधन कृषि, पशुपालन, मजदूरी या छोटी-मोटी दुकान। जमाना यानी सुकाल हो तो वाह-वाह, अन्यथा आह-आह-सी आह ही निकल पाती है। हर दूसरे-तीसरे साल अकाल यहाँ बिन बुलाए ही आ धमकता है। प्रकृति यहाँ के निवासियों से स्थाई रूप से रुठी रहती है। ठण्ड भी इतनी पड़ती है कि हेमन्त में पाला पड़ता है और गर्मियों में तपन इतनी कि पारा पचास को छूकर ही दम लेता है। इससे यहाँ के रहवासी फौलादी बन जाते हैं। तन से भी और मन से भी। मिनख यहाँ का खुद्दार। रोजी-रोटी की खोज में जननी और जन्मभूमि को छोड़कर प्रदेशों में कमाने निकल जाता है, पर चेहरे पर शिकन तक नहीं लाता। इस धरा के लोगों ने यह सिद्ध कर दिया है कि प्रकृति की मार खाता, अकाल की चोट झेलता, रोजगार से वंचित रहता, विकास में पिछड़ा हुआ, सिंचाई के लिए जल की व्यवस्था को छोड़ो पीने के पानी को भी तरसते हुए भी देश के कानून-कायदों को मानता हुआ, शान्ति व्यवस्था में सहयोग देता हुआ देश की मुख्यधारा में बहता रहता है। कानून-व्यवस्था को चुनौती नहीं देता। लूटपाट नहीं करता। दूसरे की रोटी नहीं छीनता। माओवाद या नक्सलवाद नहीं अपनाता, वह तो केवल एक ही वाद का अनुगामी है और वह है मानवतावाद। क्योंकि वह समझता है कि ये नाना प्रकार के वाद इन समस्याओं के हल नहीं, हल तो आपसी सहयोग, सुख-शान्ति एवं मेहनत की रोटी कमाकर खाने में है।

“बारहवीं पास होते ही हीरासिंह का ब्याव हो गया। औरत भी ऐसी आई रूपसुन्दरी। गाँव के लोग कहते कि यह तो पूंगळगढ़ की पद्मिनी ही है। ऐसी रूपवान स्त्री उन्होंने पहले कभी नहीं देखी। हीरासिंह से जलन, ईर्ष्या एवं डाह पालने का यह एक कारण और पैदा हो गया, मगर इंसान अपना पड़ोसी नहीं बदल सकता न।”

इसी गाँव के उत्तरी हिस्से में दो भाइयों के घर हैं। जिनमें बड़े का नाम परबतसिंह तथा छोटे का पहाड़सिंह है। दोनों के पास सौ-सौ बीघा खेत की जमीन। परबतसिंह के एक ही बेटा है, जो गाँव की ही स्कूल में कक्षा दस में पढ़ता है। नाम है हीरासिंह। पढ़ने में होशियार और व्यवहार में शिष्ट-विनम्र, जबकि छोटे भाई पहाड़सिंह के सात बेटे हैं। अधिकतर अनपढ़। कोई-कोई निरा साक्षर तो कोई चौथी-पाँचवीं पास। अनपढ़ तो भेड़, बकरी, गाय, भैंस ही चराएँगे। दो इनमें व्यस्त और मस्त। तीन खेती सम्भाल रहे हैं। दो आवारागर्दी करने में मशगूल। बड़े भाई के सन्तान देर से हुई। अतः हीरासिंह अपने चचेरे भाइयों से उम्र में काफी छोटा है। इकलौता है। माँ बचपन में गुजर जाने से उसके कोई छोटा भाई-बहन भी नहीं। परबतसिंह उम्मीद तो यह लगाए बैठा था कि पहाड़ के बेटे मेरे इकलौते बेटे हीरा से यानी अपने ताऊ के बेटे, छोटे भाई से स्नेह एवं भाईचारा रखेंगे। अपनापन जताएँगे, मगर हो उलटा ही रहा है। वे उससे ईर्ष्या पाले बैठे हैं। मन ही मन उसके प्रति जलन और डाह। विराग इस बात का कि वह तो पढ़ रहा है, वह भी दसवीं कक्षा में। हर बार स्कूल में प्रथम आता है। दूसरा कारण यह है कि उसको उसके पिता से पूरी सौ बीघा जमीन मिलेगी, परन्तु हमें बँटवारे में मात्र चौदह-चौदह बीघा ही। वह सुख-चैन की जिन्दगी जिएगा और हम हमारा सिर धूल में ही देते जाएँगे।

उस जमाने में लोग बच्चों की शादियाँ जल्दी ही कर दिया करते थे। बारहवीं पास होते ही हीरासिंह का ब्याव हो गया। औरत भी ऐसी आई रूपसुन्दरी। गाँव के लोग कहते कि यह तो पूंगळगढ़ की पद्मिनी ही है। ऐसी रूपवान स्त्री उन्होंने पहले कभी नहीं देखी। हीरासिंह से जलन, ईर्ष्या एवं डाह पालने का यह एक कारण और पैदा हो गया, मगर इंसान अपना पड़ोसी नहीं बदल सकता न। यहाँ तो दोनों परिवार रिश्ते में भाई हैं। खून का सम्बन्ध जो है।

उधर पहाड़सिंह के तीनों बेटे तो पच्चीस की उम्र पार कर चुके हैं। जैसे-तैसे करके, नोटों के बदले तीन बहुएँ लेकर आए हैं। यानी एकदम गरीब घर की। बारातियों के भोजन की भी व्यवस्था मजबूरीवश पहाड़सिंह को ही